च तु र्थ अ ध्या य

शिवानी की कहानियों में चित्रित नारी के विभिन्न रूप

चतुर्थ अध्याय

शिवानी की कहानियों में नारी के विभिन्न रुप —

प्रत्येक साहित्यकार का कुछ-न-कुछ उद्देश्य होता है। वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से उसकी रचना में निहित होता है। साहित्यकार जीवन का पर्यवेक्षक ही नहीं, वह दार्शनिक भी होता है। जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण उसकी कृतियों के माध्यम से संसार के सामने आता है। शिवानी जी का जीवन संबंधी दृष्टिकोण उनकी कहानियों में व्यक्त हुआ है।

कहानियाँ अपवाद छोड दिया जाय तो अन्य अधिकांश नायिका प्रधान हैं। शिवानी ने विशेष कर नारी-जीवन के कितने ही अंतरंग आयामों को उद्घाटित किया है। उन्होंने नारी जगत् के अन्तजर्गत के अज्ञेय और अज्ञात तथ्यों को उकेर कर उजागर किया है।

स्त्रियश्चरित्रं देवो न जानाति कुतो मनुष्याः की उक्ति कहा नहीं जा सकता कहाँ तक सही या गलत है, पर लेखिका ने अनेक नारी की जो मालिका प्रस्तुत की हैं, वे न केवल कुमाउं प्रदेश की बल्कि आम स्त्री-जाति की झाँकियाँ हैं। शिवानी की नायिकाएँ विभिन्न रुपों में चित्रित हुई हैं। इसका एक कारण यह भी है कि शिवानी एक बहुज्ञ और बहुश्रुत लेखिका है। उन्होंने अपने जीवन में बहुत कुछ देखा है। एक ओर कुमाऊं के ग्रामीण अंचलों में रही है, दूसरी ओर राजा-महाराजाओं के माहौल से भी वे सुपरिचित हैं। सरकारी अफसरों और नेताओं के खोखले जीवन को भी उन्होंने निकट से देखा है। कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से बंगाल तक फैले भारतीय जनजीवन को उन्होंने घूम-घूम कर खुली आँखों से देखा है। यही कारण है कि उनकी कहानियों में पहाडी और नगर जीवन से जुडा हुआ नारी-जीवन का मुख्य प्रतिपाद्य रहा है। पहाडी लोगों के रहन-सहन, अशिक्षा, रोग और

अन्धविश्वास आदि के चित्रों से पहाड़ी नारियों के भोले-भाले विविध रुप झाँकते नजर आते हैं। प्रस्तुत अध्याय में `शिवानी की कहानियों में चित्रित नारी के विभिन्न रुपों की चर्चा करना उचित समझती हूँ।

नारी के विभिन्न रुप --

प्राचीनकाल से ही नारी ने अपनी कोमलतम भावनाओं से पुरुष का जीवन मधुमय करने का प्रयास किया है। पुरुष के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर करने वाली नारी पुरुष के लिए प्रेरणा दायी शक्ति बन गई है। कोमलता, सौन्दर्य और त्याग इस त्रिवेणी संगम से नारी ने तो धरती पर स्वर्ग की अवधारणा की है, इसीलिए कवि सुमित्रानन्दन पन्त जी कहते हैं --

` यदि स्वर्ग कहीं है धरती पर
तो नारी उर के भीतर `।।

स्त्री और पुरुष के सहज-सुलभ आकर्षण से प्रकृति सृजनशील होती रही। सृष्टि के विकास में तो नारी का स्थान सर्वोपरि रहा ही है। मातृत्व की पीड़ा में सुखद आनन्द मानकर नारी ने सृष्टि का सृजन किया और विश्व मंगल की कामना रखी। इसी कामना के कारण नारी त्याग और सेवा का प्रतीक बन गई। इसी लिए नारी की महिमा गाते समय राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा है --

` अबला जीवन हाय तुम्हारी यही है कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी। `

(१) माता --

नारी के विभिन्न रुपों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण रुप मातृत्व है। वेदों में माता को पृथ्वी स्वरुप कहा गया है। ` पृथ्वी के समान ही वह सन्तान धारण करती है, उसका पालन-पोषण करती है और आजीवन उसके सुख की कामना करती है। स्त्री के विकास की चरम सीमा उसके मातृत्व में ही चरितार्थ होती है। `[१]

१ वर्मा - महादेवी ` शृंखला - की कड़ियाँ - पृ.सं.२६।

शिवानी की कहानियों का अध्ययन करने पर यह बात दृष्टिगोचर होती है कि शिवानी की अधिकतर नायिकाएँ मातृहीना हैं, जैसे ' सुमन श्रीवास्तव, जया-विजया, डॉ. नलिनी कोठारी, डॉ. नलिनी टंडन, चीलगाडी कहानी की ' मैं ' (छोटी बहू), कृष्णा, शिबी, उमा यादव, तिलका, किशोरी, ' के ' उर्फ कमला, ' पिरी ' उर्फ हरिप्रिया ', शुभ्रा, तोप, चन्द्रिका , ' प्रा. अनुराधा पटेल, ' चन्दो ' ' निम्मी ', ' कुसुम ', ' नलिनी मिश्रा, पुष्पा पन्त, अनसूया पटेल, जीवन्ती, वसंती , ' रमा दी ', रोजी चन्नी आदि ।

शेष नायिकाओं में ' पुष्पहार ', ' ज्यूडिथ से जयन्ती ', ' करिए छिमा ', ' तीन कन्या ', ' अनाथ ', ' जाकर ' ' प्रतिशोध ', आदि कहानियों में माता के स्वभाव और चरित्र के विभिन्न पहलुओं के दर्शन होते हैं । ' अपराधिनी ' कहानी संग्रह में छि: मम्मो ', तुम गन्दी हो ' की जानकी माता कहलाने के लिए अयोग्य है ।

शिवानी की कहानियों में माता के शाश्वत रूप के सभी पक्षों का सविस्तार वर्णन किया गया है । सन्तान चाहे अयोग्य हो, कर्तव्य-च्युत हो, समाज की दृष्टि से पतित हो, माँ का वात्सल्य-भरा आँचल सदा उस पर छाया रहता है । ' पुष्पहार ' कहानी में मंत्री की माँ का एक अनूठा चरित्र देखने को मिलता है । उसके बेटे के मंत्री बनने पर जिस समाज ने बेटे को पुष्पहारों से लदा दिया था, वही (जनता) उसकी एक गलती पर उसे थप्पड, घूंसे से बेदम मारती है । एक माँ ही थी जो पुत्र के मंत्री बनने पर उसके लाख समझाने पर भी बडी कोठी में रहने के लिए लखनऊ नहीं जाती । मंत्री भी अपनी माँ की जिद को जानता था -- प्राण रहते वह अपनी थाती नहीं छोड पाएगी ।

माँ के स्वभाव का एक सफल चित्र यह है कि यदि कुल से, चारित्रिक त्रुटि से अथवा परिस्थितियों के योग से सन्तान को कभी विपत्ति झेलनी पड़ती है, तो चाहे शेष संसार उससे रूठ जाय, परन्तु माँ अवश्य ही उसे शरण एवं संरक्षण देती है, जैसे ' पुष्पहार ' की माँ करती है ----

" हरामियो । " वह गरजी, " जब मेरा बेटा मंत्री बना, उसने पहले तुम्हारे

गाँव को ही बम्बई बनाया । कोई अपने लिए कोठियाँ नहीं खडी की । उसका यह इनाम दिया है तुमने ? हे गोल्लो देवता, मैं भी देख लूँगी और न्याय तुम भी देखना जिन जिनने इसे मारा है, उनकी लडकी का लडका, गाय की बछिया निपूती हो । उनकी रांड बहुएँ सूनी माँग और सूनी कलाइयाँ लेकर चिता चढे । "

उस घटना के बाद मंत्री गाँव छोडकर भाग जाता है, एक कोयले की खान में काम करते समय मरणासन्न अवस्था को प्राप्त कर माँ के पास आता है । जब से बेटा भागा था, उसकी माँ सिर फिर-सी हुई थी । जिसे पूर्ण रूप से स्वस्थ प्रेमिका नहीं पहचान पाई थी, उसे उन्मादिनी माँ ने पहचान लिया । जब माँ की गोद में बेटा मृत्यु के अंतिम क्षण गिन रहा होता है , तब माँ पुत्र के वेदना-विधुर चेहरे को देखकर चीखने लगती है -- " हाय, जब मंत्री था, तब कितनी मालाएँ लेकर भागते थे उसके पीछे, आज एक माला के लिए तरस रहा है मेरा बेटा । " [१]

' ज्यूडिथ से जयन्ती ' की विधवा रमा नारी के रूप में पुरुष का अवतार थी । अपने बेटे के लिए अपना प्रेम भरा हृदय उसने सदैव खोला था । पति की मृत्यु के बाद काफी मुसीबतें झेलकर शिक्षा पूरी करके अध्यापिका बन कर उसने अपने पुत्र अशोक को पाला-पोसा था । बेटे पर उसे बहुत विश्वास भी था । यही बेटा विदेशी बहू लाता है । उस बहू को ' ज्यूडिथ ' से जयन्ती ' बना दिया जाता है । इस बहू से रमा दी को अवहेलना, अपमान मिलता है, पुत्र भी कुछ नहीं कहता ।

' पुष्पहार ' की माता अशिक्षित भोली है, उसका चरित्र-चित्रण सही है । ' रमा दी ' जैसी विधवाएँ जो आज अपने पैरों पर खडी हैं, सन्तान के प्रति कर्तव्य को पूरा करने पर भी उसके ऊपर निर्भर रहती है ।

रमा दी पुत्र के अत्यधिक स्नेह रखने के कारण वह अपने भविष्य के बारे में भी नहीं सोचती ।

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - पुष्पहार - पृ.सं. ५२ ।

नारी के मातृत्व रुप का श्रेष्ठतम् रुप वह है, जब वह कर्तव्य के समक्ष अपनी वात्सल्य – भावना को तिलांजली देती है। नारी के इस रुप को भारतवासियों ने पन्ना दाई के रुप में देखा है। युग संदर्भों के अनुसार समाज की नजरों में पतिता नारी, ' हीराकनी ' अपने प्रेमी की प्रतिष्ठा को अबाधित रखने के लिए, अपनी अवैध सन्तान को जल समाधि देने में तिलमात्र भी विचलित नहीं होती।

' प्रतिशोध ' को सौदामिनी का माता रुप और ' तीन कन्या ' की माता का रुप एकही रुप के दो पहलू हैं। सौदामिनी भावना से व्यवहार को अधिक महत्वपूर्ण मानती है। उसे अनुशासित गृहस्थी पर बड़ा गर्व है। इसलिए वह पति से कहती है " अपनी बिरादरी का आई.ए.एस.तो दूर इंजिनियर,डॉक्टर, दामाद जुटाने में ही तुम्हारा सारा फण्ड निकल जाएगा। उस पर हमारे मकान पर अभी छत भी नहीं पड़ी। इस युग के प्रत्येक बुध्दिमान माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपनी सन्तान को ऐसे प्रेम-विवाह के लिए उत्साहित करे। दोनों प्रेम के चक्कर में पड़कर विवाह करने का निश्चय ले लेंगे, तो हम दोनों पल्ले झाड कर बड़े मजे से दूर खड़े रह कर क्रोध का अभिनय कर सकेंगे।" [१]

दहेज बचाने की माँ की कोशिश का नतीजा यह है कि पुत्री एक दिन एक मुस्लिम लड़के से निकाह कर लेती है। स्वयं को आधुनिक चतुरा समझनेवाली सौदामिनी आधुनिक युग की ' इर्स मेंट ' को स्वीकार नहीं कर सकती। फिर उसे पति का असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार तथा उसका जली-कटीं बातें सुननी पड़ती है — " यह सब तुम्हारी ही शिक्षा का परिणाम है। लड़की कहाँ जाती है, कब लौटती है, किसके साथ घूमती है, क्या कभी देखा था तुमने ? फिर तुम्हारी महत्वाकांक्षा भी तो यही थी कि पुत्री किसी से प्रेम-विवाह करे। सो पूरी हो गई ,अब तो कलेजा ठण्डा हो गया होगा तुम्हारा।" [२]

सौदामिनी के रुप में एक महत्वाकांक्षी माता अपनी पुत्री के विजातीय

---

१ रथ्या – प्रतिशोध – पृ.सं.९१।

२ – वही – पृ.सं.९८।

विवाह कारण बनी दिखाई देती है।

इसके विपरीत समय की माँग के अनुरुप चलने को इन्कार करनेवाली, मध्ययुगीन माता जैसा व्यवहार करनेवाली माता का रुप 'तीन कन्या' कहानी में चित्रित हुआ है। 'तीन कन्या' में दो जुडवाँ बहनों की तुलना में छोटी बहन बेबी सुन्दर है। उसकी सगाई प्रतुल से होती है। परम्परावादी माँ बडी बहनों के विवाह से पहले बेबी का विवाह करना नहीं चाहती। साथ ही इस कालावधि में बेबी और प्रतुल को एकान्त में न मिलने देती है, न बाहर और कहीं घूमने जाने देती है। कहती है -- "क्या समझा है ? रायबहादुर बॅनर्जी परिवार की कुंआरी लडकी रात आधी रात चौक बाजारों में घूमती फिरेगी ?"[१]

दो बहनों के लिए वर संशोधन के उपरान्त उनका विवाह फिर प्रतुल और बेबी का विवाह। इतनी लंबी अवधि, प्रतुल जैसा नवयुवक अपनी मँगेतर से मिले बिना कैसे काट सकता था ? प्रतीक्षा की भी एक सीमा होती है, अन्धविश्वास, रुढिवाद के मिथ्या ढकोसलों के नीचे दबी 'माँ' यह जान नहीं पाती प्रतुल के द्वारा सगाई तोड देने से बेचारी बेबी भी अपनी बडी बहनों की तरह अविवाहित रहती है।

माँ ने अपनी पुत्री की सुरक्षा के हेतु से यह किया था परन्तु आधुनिक युग में अत्यधिक संकीर्ण विचार भी हानिकारक हो सकते हैं।

इन माताओं के अलावा, कुँवारी माता, कुरुप सन्तान की माँ, अन्तर्जातीय विवाह के कारण जातीय वाद के घेरे में बँधी माँ, आदि रुपों में चित्रित माताओं पर विचार करेंगे।

कुँवारी माताओं में गूंगा की कृष्णा, 'मीलनी' की विलासिनी और 'शिबी' आती है। 'मीलनी' में सुहासिनी, विलासिनी की माँ अपने बेटी, जामाता की मृत्यु का बदला लेना चाहती है -- वह विलास से कहती है -- "कौन थी वह हरामजादी मीलनी ? कोई आया थी या किसी चपरासी की बीवी ? आखिर तूने देखा होगा उसे - मैं खून पी जाऊंगी उस बदजात का, भले ही फाँसी पर क्यों न चढना पडे।"[२]

---

१ किशकुली - तीन कन्या - पृ.सं.८५।
२ गेन्डा - मीलनी - पृ.सं.७०-७१।

'कृष्णा' को पूर्णरूप से कुंवारी माता कह नहीं सक्ते क्योंकि उसने छुपके से अपने ईसाई प्रेमी विकी डिसूजा से चर्च में विवाह कर लिया है। वह अब गर्भवती भी बनी है, किन्तु एक तो उसके पिता और समाज से विवाह की बात गुप्त है, और विवाह के पश्चात् जल्द ही विकी की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। उसके पिता को तो विकी से अन्तर्जातीय विवाह पसंद नहीं था, अत: वे इस विवाह तथा सन्तान को 'अवैध' मानकर कृष्णा के उस शिशु को एक अनाथाश्रम में रखने के लिए मजबूर करके उसका दूसरा विवाह कर देते हैं। कृष्णा स्वभाव से भीरु, मृदु होने से कुछ कह नहीं सक्ती, समाज के नीति नियमों के आगे अपने बच्चे की बलि देती, उसका त्याग करती है।

इसके विपरीत 'भीलनी' की विलासिनी भी कुमारिका माता है, जिसने अविवाहित रहने का प्रण किया था, इस बीच वह अपने प्रेमी (जीजाजी) से गर्भवती बनी। वह अपनी बेटी को उसकी एक पेशंट कुमारी माँ की सन्तान बता कर अपने मातृत्व की आस को पूरी कर लेती है।

'शिवी' तो वेश्या ही है, वेश्या की बेटी को समाज बेहिचक स्वीकारता है। अत: वह कुण्ठाश्रम में रह कर बेटी को पालती है।

'अनाथ' कथा की ऐनी स्वयं माँ-पिता के अन्तर्जातीय विवाह की शिकार हो चुकी है साथ ही कुष्ठ रोगी माता की बेटी है। अब उसका बेटा भी उसी समस्या का शिकार होने जा रहा था। ऐनी परित्यक्ता है। ऐनी को समाज द्वारा जो अवहेलना अपमान कुष्ठरोगी माँ और नाना के कारण सहने पडे, उससे अपने बेटे को अछूता रखने की इच्छा से (उसे उसकी नानी कुष्ठरोगी थी, यह मालूम न हो), वह मातृत्व की बलि चढाकर बेटा 'हिन्दू' जाति का ( ) माना जाए, यह सोच कर उसे 'हिन्दू' अनाथाश्रम रखती है।

'बिन्दू' कहानी में लेखिका की माँ परित्यक्ता दस सालकी बिन्दू, जो लेखिका के साथ खेलने ( ) लिए आती है, उसकी कलुषित छाया से अपनी बेटी को बचाने के लिए कहती है — "इसे मुँह मत लगा। ये नागिन, असली नागिन की बच्ची है, काटे तो लहर नहीं, न जाने कितने घर बरबाद कर चुकी है।"[१] इसके कथन के

---

१ 'बिन्दू', [illegible] पृ० ११०।

पीछे बेटी पर अच्छे संस्कार करने, की भावना है।

'मौसी' कहानी की तिला अपने प्रेम-विवाह में असंतुष्ट है, उच्छृंखल पति से तंग आ चुकी है, ऐसे में जब वह तीसरी बार पेट से रहती है, तो मायके जाती है। वहाँ पर उसकी मौसेरी बहन, जिसके बच्चे जन्म लेते ही मर जाते हैं वह भी प्रसव के लिए आती है। उसकी मरी हुई बच्ची खुद उठाकर अपनी बेटी को उसकी बगल में लिटाती है। अपनी सन्तान अपने घर में पलने से बहन के घर में सुख से रहेगी, यही विचार उसे ये हेरा-फेरी करने के पीछे रहता है। सन्तान की खुशी के लिए माता का यह त्याग अपूर्व है।

'जोकर' कहानी में सुस्वरूप, संपन्न माता अपने इकलौते किन्तु कुरूप अपाहिज बेटे के लिए कितनी व्याकुल रहती है, कैसे उसे ढूँढने के लिए दुनिया का चप्पा चप्पा छान रही है, इसका करुण चित्र प्रस्तुत है। इस प्रकार मातृत्व नारी जीवन का ऐसा वरदान है, जिसके समक्ष वह पत्नीत्व, सुख-संपत्ति सब कुछ त्यागने के लिए तैयार है। इसके विपरीत 'करिए छिमा' की हीरा प्रेमी के सम्मुख मातृत्व (_____) सिद्ध कर देती है।

माताओं के विभिन्न रूपों के अतिरिक्त माँ बनने के लिए तरसती 'दो स्मृतिचिह्न' की बिन्दु और 'चलोगी चन्द्रिका' की चन्द्रिका, जिसको पति 'वंध्या' कहकर घर से निकाल देता है, 'छि: ममी, तुम गन्दी हो' की व्यभिचारी माता, तथा 'चन्नी' जो पति तथा तीन बेटियों को छोड़कर पुराने प्रेमी के साथ भाग जाती है। 'भिद्गुणि' कहानी की किकी पारिवारिक समस्याओं के कारण भरा-पूरा परिवार बच्चों को छोड़कर पुराने प्रेमी रिपुदमन के आश्रय में चली जाती है। यह भी माँ का एक रूप है। इन नारियों के चरित्रों से माँ विभिन्न पहलुओं के दर्शन कराने में शिवानी सफल हुई हैं।

(२) पुत्री --

प्रतिशोध मनुष्य के मन की एक सहजात प्रवृत्ति है। इसके लिए मनुष्य हिंसा तक कर बैठता है। अभी तक यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सका है कि बदला

लेने की भावना पुरुषों में अधिक होती है या स्त्रियों में। अक्सर यह कहा जाता है कि नारियाँ प्रतिशोध लेने में बड़ी कठोरता से काम लेती हैं। आम्रपाली द्वारा महात्मा बुद्ध से प्रतिशोध लिए जाने की कहानियाँ इतिहास प्रसिद्ध हैं। शिवानी की कहानियों में वंचक पति का प्रतिशोध लेनेवाली पत्नियों के चित्र बहुत हैं। किन्तु अपने माता-पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने की भावना से पीड़ित होकर सबसे अधिक साहस का परिचय देने वाली नारी है -` पुष्पा पन्त `।

पुष्पा पन्त एक ऐसी साहसी पुत्री है, जो पुत्र से बढ़कर साहस दिखाती है। तेरह वर्ष की उम्र में पुष्पा पन्त पर भोलादत्त बलात्कार करता है। इस आघात से उसके माता और पिता चल बसते हैं। पुष्पा स्कूल मास्टरनी बन गई है। एक दिन वही भोलादत्त मंत्री बनकर एक समारोह के लिए स्कूल में आता है। फिर उसका निर्लज्ज आचरण पुष्पा के क्रोध,दु:ख रुपी लावा को जगा देता है। " वह सब स्मृतियाँ एक साथ तीखे भालों-सी उसे कोंच उठीं। वह एक क्षण को सब कुछ भूल गई। कुछ ही घंटों पूर्व तम्बू गाड़ने लाया गया बड़ा-सा घन वहीं पड़ा था। लपककर उसने उठाया और दोनों हाथों से पकड़ कर दम्म से भोलादत्त के सिर पर दे मारा।... भोलादत्त का सिर फट्ट से दो समान फांकों में फटकर रह गया।"[1]

पुष्पा जैसी सज्जन नारी से यह क्या हो गया, सोच कर सारे विस्मित रह जाते हैं। पुलिस उसे ले जाने लगती हैं, तब वह अपने प्रेमी पिताम्बर को रहस्योद्घाटन करती है --" जानते हो, मैंने हत्या क्यों की ? आज से वर्षों पूर्व इस दानव ने मेरा सर्वस्व हरण किया था। उसी लज्जा ने मेरे पिता के प्राण लिए, माँ को दिल का दौरा पड़ा और वह भी चली गई। आज इतने वर्षों में मैंने पुत्री होकर भी माता-पिता का तर्पण किया पीताम्बर।"[2]

अन्याय का बदला लेने वाली साहसी नारी का रुप` पुष्पा पन्त` के माध्यम से चित्रित किया है। श्रीमती शिवरानी विश्नोई की भी` तर्पण ` नामक एक काल्पनिक कहानी है, जिसमें राजकुमारी विलासकुमारी पिता के खूनी को मार

---

१ माणिक - तर्पण - पृ.सं.७९।

२ - वही - पृ.सं.८१।

कर पिता का तर्पण करती है।

इसके अतिरिक्त अन्य अनेक ऐसी कहानियाँ हैं, जिनमें पुत्रियों का उल्लेख तो आया है, परन्तु वे आम लड़कियों के समान हैं , जैसे — कुसुम, कृष्णावेणी, पिरी, नलिनी, आदि।

'नये' कहानी की पुट्टी के रुप में देशभक्त, पति भक्त सन्तान के दर्शन होते हैं। तिब्बती पुट्टी का हाथ थामने की इच्छा पहाड़ी गुमान सिंह पुट्टी की माँ सम्मुख प्रकट करता है। पुट्टी पहाड़ी संस्कारों से सर्वथा भिन्न संस्कारों में पली हुई होने के कारण उसकी माँ सहमत नहीं होती, किन्तु दोनों का अटूट प्रेम उसे स्वीकृति देने के लिए बाध्य करता है। विवाह के बाद गुमानसिंह की लाम पर मृत्यु हो जाती है, घर में सास-ननद उसे दिनरात सताते हैं तब पुट्टी की माँ उसे अपने घर ले जाना चाहती है, किन्तु वह इन्कार कर देती है।

(३) पत्नी —

हिन्दू धर्म के अनुसार पातिव्रत्य पत्नी का परम-धर्म माना गया है। नारी की जीवन यात्रा में पत्नी रुप ही अत्यन्त महत्वपूर्ण है और पति-पत्नी का रिश्ता सबसे आकर्षक है। परिवार की सुखद या दुखद स्थिति पति-पत्नी के संबंध पर ही निर्भर करती है।

शिवानी की कहानियों में दांपत्य जीवन में सफल और असफल दोनों ही पत्नी रुपों का चित्रण किया है। शिवानी के द्वारा चित्रित पति-पत्नी संबंधों में कुछ पत्नियाँ विधवा हैं तथा अनमेल विवाह का शिकार बनी हैं।

गृहस्थी में सफल बनी पत्नी अपनी गृहस्थी में पूर्णतः सुखी है, यह बात नहीं। उसे संकटों का मुकाबला सहनशीलता से करना पड़ता है, तभी वह इस स्थिति को पहुँच सकती है।

'बन्द घड़ी' की नायिका माया और उसके पति में आए दिन झगड़ा होता रहता है। आखिर तंग आकर माया इन मुसीबतों से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या करने की सोचती है। किन्तु घड़ी के बन्द पड़ने से उसे समय का पता नहीं चलता।

शाम को घर आये पति को तथा बच्चों को देख कर उसे अपनी गलती का एहसास होता है। शिवानी जी यह बताना चाहती है कि हरेक के जीवन में सुख-दुख के प्रसंग आते ही रहते हैं। दु:ख के समय अगर हम धैर्य, शांति से काम ले तो फिर सुख के क्षण आते हैं। इसीलिए हमारे यहाँ गुस्सा आने पर एक से दस तक अंक गिनने के लिए कहते हैं। थोडा समय बीत जाने पर गुस्सा भी ठंडा होता है। `माया` को भी यही अनुभव आता है, बाद में वह सुखी हो जाती है।

पत्नी कभी-कभी गलत राह पर जाने वाले पति को सच्ची राह दिखाती है। जैसे `अपराजिता` कहानी की नायिका आरती सक्सेना अपने पति को एक ढोंगी महाराज और उसकी शिष्या के चंगुल से सुरक्षित रुप में वापस अपने घर लाने में सफल होती है। इसके लिए उसे बहुत संघर्ष करना पडता है। अन्ततोगत्वा वह अपनी गृहस्थी को सफल बनाने में सफल हो जाती है।

`मित्र` कहानी की राधा और शर्त कहानी की `रमा` संयोगवश अच्छा पति मिलने से उनकी गृहस्थी भी `सुखी परिवार` के अंतर्गत आती है।

गृहस्थी में सफल होने के मतलब है सहनशीलता। साथ गृहस्थ जीवन के प्रति अनन्य निष्ठा, पति तथा संतान के प्रति त्याग की भावना के बलपर सफल गृहस्थी टिक सकती है। इस प्रकार गृहस्थी में सफल पत्नियाँ माया, आरती, राधा, रमा इत्यादि।

गृहस्थी में असफल पत्नियाँ --

शिवानी के कथा साहित्य में बानो, माधवी, किकी, चन्नी, मानवी, तिला, ऐनी, चन्दो, बिन्दू, तिलोत्तमा, शुभ्रा, सौदामिनी, सुपर्णा, अनुराधा के आदि।

दांपत्य जीवन रुपी पुष्प को कृमि बन कर काटनेवाले कुछ प्रमुख विघटनकारी तत्व ऐसे हैं --- अस्वस्थता, तनाव, अर्थसंकट, विचार-वैभिन्य, अविश्वास, संदेह, हठात ओढा हुआ दांपत्य जीवन, अनमेल विवाह आदि।

`लाटी` तथा `प्रतीक्षा` कहानी में पत्नी की बीमारी तथा मानसिक रुग्णता के कारण परिवार उजड जाता है।

पारिवारिक तनाव-संघर्ष के कारण 'किकी' तथा 'चन्नी' अपने पति बच्चों का त्याग कर पुराने प्रेमी के पास चली जाती है। ऊदता, निराशा, घुटन, चुभन और ऊबभरी स्थितियों को सहने की हद समाप्त हो जाने पर ये नारियाँ अपना अलग मार्ग ढूँढ लेती हैं।

''चांद' कहानी में 'विवाह-विच्छेद' का कारण बनता है मानवी और उसके पति जे.के. का विपरीत स्वभाव एवम् विचार वैचित्र्य। दोनों के रहन-सहन, आचार विचार इनमें जमीन आसमान का फरक है। जिसके कारण घर नित्य कलहों से गूँजता रहता है। फिर मानवी को विवाह-विच्छेद के निर्णय के लिए जे.के. का नौकरानी के साथ संबंध रखना कारण बनता है। पति का दूसरी स्त्री के साथ संबंध रखना आज की पत्नी बिलकुल सह नहीं सकती। अपने बेटी को साथ लेकर वह जाती है।

शिवानी ने अन्तर्जातीय या अंतर्प्रान्तीय प्रेम-विवाहों को असफल बताया है, ऐसी कहानियाँ है --'मौसी', 'अनाथ' आदि। 'मौसी' कहानी की तिला विवाह के बाद पति के घर में आधुनिकता के नाम पर उच्छृंखल वातावरण देखती है। पति के कामी प्रवृत्ति से उसे खिन्न आती है। तब उसे अपनी असफलता का एहसास जीवन के प्रति निराश कर देता है।

'अनाथ' की ऐनी अन्तर्जातीय विवाह करने बाद कट्टर श्वसुर के कारण परित्यक्ता बन जाती है।

अनमेल विवाह के कारण 'पिटी हुई गोट' की 'चन्दो' और 'बिन्दू' की बिन्दू पारिवारिक जीवन में असफल बनती है।

अपाहिज रुग्ण संतान के जन्म के कारण 'जोकर' की तिलोत्तमा और उसके पति की गृहस्थी उजड जाती है।

'शपथ' कहानी में नायिका शुभ्रा का मजाक बाद में गंभीर रूप लेकर उसे ही मनोरुग्ण बना देता है, पति भी उसकी बीमारी के आगे हतबल है।

'भीलनी' में सौदामिनी का परिवार नष्ट करने का कारण बनती है 'विलासिनी'।

ओढा हुआ दांपत्य जीवन जी रहे हैं - गैन्डा की सुपर्णा और 'राहित'।

अनमेल विवाह के कारण टूटते दांपत्य जीवन के उदाहरण हैं — 'के',
कहानी और 'मन का प्रहरी'। पत्नी पति से उम्र में बडी होने के कारण पति से उनकी बनती नहीं। प्रथम में पति पत्नी को छोडता है,तो दूसरी में पत्नी पति को छोड कर पुराने प्रेमी को अपनाती है।

अन्य असफल नायिकाएँ —

'अलख माई' की लक्ष्मी,' छि:ममी तुम गन्दी हो' की 'जानकी'।

अनमेल विवाह के कारण 'के' को अपने पति शेखर के प्रति संदेह,और अविश्वास है। इस संदेह का कारण बनी 'किशोरी' को समूल नष्ट करने के प्रयास में वह अपनी गृहस्थी की जडे नष्ट कर देती है। इससे मिलता-जुलता चरित्र है 'गैंडा' की सुपर्णा का। अपनी सखी और पति के अवैध संबंधों को देख कर वह सन्न रह जाती है। उसकी सखी 'राज' की मृत्यु होती है होटल के फूड - पॉइज़न से। किन्तु उसके पति को विश्वास है कि सुपर्णा ने ही राज को मारा है। सुपर्णा मानसिक रोग की शिकार बनती है।

'आज टी.बी.सिरदर्द और जुकाम खांसी की तरह आसानी से जीती जाने वाली बीमारी है, पर आज से कोई बीस साल (१९६० के आसपास) पहले टी.बी. मृत्यु का जीवन्त आह्वान थी।' इस टी.बी.कारण विधवा बनी नारियों का चित्रण बहुत मात्रा में है। जैसे कुसुम, चीलगाडी की छोटी बहू आदी।

(४) प्रेमिका —

मानव-जीवन में प्रेम का अनन्य महत्त्व है। स्त्री-पुरुष के जीवन में प्रेम का आकर्षण सहज सुलभ है। प्रेम का एक मधुकण मानव जीवन में पर्याप्त परिवर्तन ला सकता है। गरीब हो या श्रीमंत, शिक्षित हो या अनपढ उसकी आत्मा किसी के प्रेम के लिए तडप उठती है। शिवानी ने स्त्री-पुरुष के इस प्रेम का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। इस प्रेम का चित्रण दो रुपों में देखा जा सकता है। प्रेम में सफल नारियाँ तथा असफल नारियाँ ये दो रुप दिखाई देते हैं।

विवाह पूर्व प्रेम का चित्रण जिसमें प्रेमी प्रेमिका को धोखा देता है ऐसी प्रेमिकाएँ हैं -- 'दो बहनें' की जया, 'मास्टरनी' की मास्टरनी, 'चिर स्वयंवरा' की रजनी दी, 'दण्ड' की चांदमनी, 'गजदन्त' की निम्मी आदि। इन प्रेमिकाओं को प्रेम में असफल होने का कारण है कहीं पर प्रेमी की प्रेम-भावना से बलवत्तर वासना, कहीं उसका स्वार्थ पर टिका हुआ प्रेम कहीं दहेज-प्रथा तो कहीं जातीयता का सामाजिक बन्धन।

शिवानी की कहानियों में कुछ प्रेमिकाएँ ऐसी भी हैं जो विवाहिता तथा माँ बनने पर भी अपने पुराने प्रेमी को भूला नहीं पाती और मौका मिलने पर फिर प्रेमी के यहाँ चली जाती हैं। उदा. किकी और चन्नी। 'दो बहनें' का केशव और गजदन्त का 'गिरीन्द्र', 'मास्टरनी' का सुबोध दहेज की लालच में प्रेमिकाओं को त्यागते हैं। शिवानी की कहानियों में 'चन्द्रिका' जैसी प्रेमिका का रूप भी है, जो अपने प्रेमी की तुलना में अमीर युवक से विवाह करना पसंद करती है। 'मन का प्रहरी' कहानी में प्रा. अनुराधा पटेल के रूप में जो ऐसी प्रेमिका नजर आती है, जो अपने पति से मन ऊब जाने पर उसको छोड कर पुराने प्रेमी 'मधुकर' के साथ चली जाती है।

प्रेम का आदर्श रूप प्रस्तुत करनेवाली प्रेमिकाएँ --

शिवानी अभिजात वर्ग की प्रेमिकाएँ, भावना, प्रेम से व्यवहार को श्रेष्ठ मानती हैं तो पहाडी परिवेश की कुछ प्रेमिकाएँ प्रेम का आदर्श रूप प्रस्तुत करती हैं। जैसे 'करिए छिमा' की हीरावती, 'शिबी' की (शिवप्रिया), शिबी, 'धुआँ' की रखुला, 'मास्टरनी' की मास्टरनी' आदि।

(५) बहन भाई का रिश्ता --

बहन-भाई का प्रेम भारतीय समाज में पवित्र माना गया है। बडी बहन छोटे भाई की जिम्मेदारियाँ को उठाती है, उसे माँ का प्रेम भी देती है। 'चीलगाडी' की नायिका उसका भाई कुन्दन मातृहीन होने से कुन्दन के लिए दीदी सबकुछ है। उसे छोडकर ससुराल आते समय उसे खूब दु:ख है। ससुराल में विधवा बनी छोटी बहु

(दीदी) शील रक्षणार्थ घर से भाग कर एयर होस्टेस बनती है। विमान में बैठ कर देश-विदेश घूमते समय उसे 'चीलगाडी चीलगाडी' कहनेवाला भाई याद आता रहता है।

लेखिका की सहेली का भाई, लेखिका को अपने भाई जैसा लगता था। यही भाई, दस वर्ष का ध्रुव कुंद्रू देश के लिए शहीद होता है।

'मेरा भाई' नायक कथा में लेखिका का 'सुब्बय्या' नाम का राखी बन्द भाई आगे चलकर डकैत बन जाता है। बरसों बाद ट्रेन में दोनों की भेंट होने पर अपनी बहन की चोरी की हुई सूटकेस के साथ बहुत से रुपये छोड जाता है। ये सारा धन तिरुपति को दान कर भाई के लिए प्रार्थना करने का लेखिका निश्चय करती है।

'मामाजी' कहानी में नायिका रोहिणी अब उच्चपदस्थ अफसर की पत्नी बन गयी है, अत: अपने जुडवा भाई जो पागल और अकर्मण्य है, भाई मानने से इन्कार कर देती है। आज भी पारिवारिक सम्बन्धों में प्रतिष्ठा की ये दरार दिखाई देती है।

कुछ अपवाद छोडकर शिवानी ने अपनी कहानियों में बहन भाई का पवित्र आत्मीय और सात्त्विक प्रेम का चित्रण किया है।

बहन - बहन का रिश्ता —

एक ही माँ की संतान होने के कारण बहनों को बचपन से ही समान वातावरण और समान संरक्षण मिलता है। इसीलिए एक ओर उनके मन में सहज-स्नेह का भाव रहता है तो दूसरी ओर बराबर की, कभी-कभी प्रतिद्वंदिता की भावना भी। शिवानी की कहानियों में बहन-बहन के इस सहज स्नेह के उदाहरण हैं — दो स्मृतिचिह्न की इंदु-बिंदु। इसके विपरीत व्यवहार हीरावती-प्रभावती में दिखाई देता है। 'करिए छिमा' कहानी में विधवा हीरावती को ससुराल की यातनाओं से मुक्त करने के लिए अपने घर ले आती है किन्तु हीरावती बहन की अनुपस्थिति में उसके सौभाग्यकोष पर डाका डालती है। 'भीलनी' कहानी में भी सुन्दरी

विलासिनी अपने जीजाजी के साथ संबंध प्रस्थापित करती है, उसकी बडी बहन सुहासिनी को यह मालूम होने पर वह विलासिनी की हत्या करते समय गोली पति को लगती है, वह भी बाद में आत्महत्या कर लेती है। बहन और जीजाजी के मृत्यु से बहन की आबाद गृहस्थी को बरबाद करने का कारण बनी, विलासिनी को हुआ दु:ख और पश्चात्ताप इन शब्दों में व्यक्त हुआ है --" इसीसे तो आज तक डेडी-ममी से मिलने नहीं गई। इसे लेकर उनके सामने खडी हुई तो भोले डेडी भले ही न समझें, ममी एकदम समझ जाएँगी कि वह बदजात भीलनी कौन थी। दिद्दा मुझे माफ कर गई, पर उस बडी अदालत ने मुझे माफ नहीं किया। दिया है आजन्म कारावास - आत्मीय स्वजनों के चेहरे देखने को भी तरसने का कठोर दण्ड इसीसे शायद वह उदार न्यायाधीश मुझे काबुल भेज रहा है; जैसे पहले कभी हत्या के अपराधी को कालापानी भेज दिया जाता था है ना ?"[१]

जुडवाँ बहनों के उल्लेख " करिए छिमा (हीरावती-प्रभावती) ", तीन कन्या की जुडवाँ बहने तथा " छल की " तृप्ति-दीप्ति।

(६) सास और बहू का पारस्पारिक संबंध --

सास और बहू के पारस्पारिक सम्बन्ध आदिकाल से अब तक मधुर भी रहे हैं, तिक्त भी रहे हैं। आज का युग टूटते संयुक्त परिवार का युग है। एकाकी रह कर सुखोपभोग की लालसाएँ, अपने सुख में किसी की हिस्सेदारी न सह पाने की प्रवृत्ति, आज बढती जा रही है। आज के युग के समस्त सासों को न असहिष्णु कहा जा सकता है न तो समस्त वधुओं को अलगाववादी कह सकते हैं दो बर्तन पास होने पर टकरा जाते हैं।

सौदामिनी प्रगतिशील आधुनिक संपन्न परिवार की बेटी है जिसका ब्याह प्रतिभासंपन्न पढेलिखे शंकर से होता है। सौदामिनी का ससुरालवाले अभावग्रस्त संस्कारी परिवार के हैं। महत्त्वाकांक्षी सौदामिनी बडी सूझबूझ से काम लेकर उनसे पीछा छुडवाती है --" पुत्री के जन्म पर एक ही बार उसके सास-ससुर आए

---

१ गैन्डा - भीलनी - पृ.सं.७२।

CAR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

और सौदामिनी के हृदयहीन व्यवहार ने उन्हें तीसरे ही दिन लाठी लेकर ऐसा खदेड़ा कि जब तक जीवित रहे, बेचारों ने कभी उधर झाँकने का भी दुस्साहस नहीं किया।" [१]

आधुनिक नारी सुशिक्षित होने के कारण यह धैर्य दिखा सकती है, किन्तु गाँवों की अनपढ़ बहुओं के लिए सास का अत्याचार सहने के अलावा कोई चारा नहीं होता। सास-बहू का यह रिश्ता बिगाड़ देने का कारण लेखिका ने दिया है --

" पुत्र जब जननी को पुत्रवधू - चयन के जन्म जात अधिकार से वंचित करने की धृष्टता करता है, तो पढ़ी-लिखी जननी का चित्त भी विद्रोह कर उठता है, फिर वह तो एक अपढ़ ग्राम्या माँ थी।" [२]

' जा रे एकाकी ' की यह माँ पुत्र द्वारा पसंद की हुई सुंदरी चनुली को विवश होकर घर में लेती है। पुत्र की युध्द स्थल पर मृत्यु हो जाती है। " पुत्र की अकाल मृत्यु ने कर्कशा सास को जीती-जागती तोप बना दिया और वह दिन रात आग उगलने लगी " कुलच्छिनी, तूने ही मेरे बेटे को खा लिया।" [३]

ऐसी ही ' नथ ' की पुट्टी की सास है। गुमानसिंह के इस प्रेम विवाह का घर में किसी ने स्वागत नहीं किया। उसके लाम पर जाने के बाद सास, विधवा ननद और जिठानी की गालियाँ सुनकर पुट्टी जान बूझाकर बहरी बनने का नाटक करती है। गुमानसिंह के वीरगति को प्राप्त होने के पूर्व पुट्टी की रुलाई पर सास दिन-भर बड़बड़ाती रहती -- " कुलच्छनी रो-रोकर कैसा अशगुन कर रही है।" [४]

---

१ रथ्या - प्रतिशोध - पृ.सं.९५।

२ अपराधिनी - जा रे एकाकी - पृ.सं.२७।

३ - वही - पृ.सं.२७।

४ चिरस्वयंवरा - नथ - पृ.सं.८२।

बहू के प्रति ममतामयी सास के रूप में 'अपराधी कौन' की अमला की सास का चित्रण किया है। सोने की एक सुन्दर करधनी जो सास के पास है, वह बेटी मीना या बहू अमला को दे, यह सवाल पैदा होता है, क्योंकि दोनों को वह करधनी चाहिए। तब अमला की सास सोचती है -- "बेटी तो पराया धन है, कल परसों ब्याह होगा तो चली जाएगी। जिन्दगी तो उसे बहू के साथ ही काटनी थी।" [१]

इस तरह पुत्री से ज्यादा बहू से प्यार करती है, चाहे इसमें उसको स्वार्थ, व्यवहार की बात क्यों न हो।

अब एक ऐसी सास का रूप देखेंगे जो सास तो नहीं बन पायी, किन्तु सगाई होने पर भी जिसने बहू और पुत्र के विवाह को सम्मति नहीं दी। 'जेष्ठा' कहानी में पिरी और देवेश एक दूसरे को चाहते हैं। पहले तो देवेश की माँ रूपवती बहू लाने को तैय्यार नहीं थी, वह सोचती हैं "ऐसी रूपवती बहू के सौ नखरे भला वह कैसे सहेगी .... फिर उसके तीनों वहनौत रूपवती पत्नियों के गुलाम बन कर रह गये थे। अत: वह कहती हैं -- "बहू के रूप को क्या मैं चाटूँगी ? .. मुझे तो गुण चाहिए गुण!" "पांडेजी ने मूर्ख पत्नी को मना लिया, "कैसी बात करती है, मक्खीचूस की एक ही लड़की है, आखिर कितने दिन जिएगा ? सब सम्पत्ति हमारे देबू को मिलेगी।" [२]

विवाह के पूर्व पिरी का जेठ वापस आता है, जिसे सब मरा हुआ समझते थे। फिर पिरी के जेष्ठा नक्षत्र के कारण उसकी सास इस विवाह को होने नहीं देती पिरी और देवेश दोनों एक दूसरे के लिए अविवाहित रह मिलते रहते हैं -- "इसलिए कि वह मेरे बिना जी नहीं सकता और अपनी खूसट माँ से बेहद डरता है। कहती है, उसने यदि मुझसे विवाह किया तो वह ताल में कूद पड़ेगी, पर हम दोनों के मिलने पर अब विधाता भी प्रतिबंध नहीं लगा सकता... समझी ?" [३]

---

२ मेरी प्रिय कहानियाँ - जेष्ठा - पृ.सं.९१-९२।

३ - वही - पृ.सं.९७।

पिरी का यह कथन एक हठीली, जिद्दी सास अपने बेटे और होनेवाली बहू के बीच किस तरह रोड़े अटकाती है, इसका उदाहरण है।

यहाँ पर लेखिका का एक वक्तव्य उल्लेखनीय है -- " इसमें कोई सन्देह नहीं कि नारी ही नारी की सबसे बड़ी शत्रु है। पिरी की सबसे प्रतिद्वन्द्विनी थी स्वयं उसकी भावी सास। पूरे बीस वर्ष तक उसके विवाहमार्ग में वह नागिन-सी अड़ी-खड़ी फुफकारती रही थी और उन बीस वर्षों में किस दु:स्साहस से पिरी उसी मार्ग से छुप-छिप कर अपने प्रेमी से मिलती रही थी -- मैं सब जानती थी। " [1] सास का बहू के प्रति ईर्ष्या द्वेष का यह कारण मेरे ख्याल से लेखिका का प्रिय कारण है। शिवानी की सबसे नवीनतम कहानी " चांचरी " में भी मातृहीना, अपूर्व सुन्दरी, सामान्य शिक्षिता बहू के प्रति सास की यही भावना है -" एक दिन श्रीनाथ घर भर के विरोध को ताक पर रख, अपने मनपसंद की बहू ले आया था, जिसके लिए उसकी माँ ने उसे कभी क्षमा नहीं किया था। संसार की कौन-सी जननी भला पुत्र को अपनी मनपसंद बहू ले आने पर क्षमा कर पाती है। उस पर उसकी माँ कमला अपने कर्कश स्वभाव के लिए पूरी बिरादरी में यथेष्ट कुख्याति अर्जित कर चुकी थी। "

सारांश --

सास के बहू के प्रति ऐसे रुद्रतापूर्ण व्यवहार के पीछे एक मनोवैज्ञानिक तथ्य भी है। पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी को बाह्य संसार से वंचित करके घर की चार दीवारी तक सीमित कर दिया गया तो स्वभावत: उसके मन में घर पर अपना स्वामित्व स्थापित करने की भूख जाग्रत हो गई। इस कारण कई जटिल स्थितियाँ उत्पन्न हुई। वधू के घर आने पर सास के एकाधिकार पर चोट पड़ने का अनुभव करना और इस अनुभव से सास एवं बहू के बीच तनाव और अलगाव का जन्म, उन स्थितियों में एक स्थिति है। सास की मन:स्थिति कुछ ऐसी हो जाती है कि अब पुत्र पर उसका वह अधिकार नहीं रह गया है, जो विवाह से पूर्व था। संयुक्त परिवार इस धारणा से उत्पन्न समस्याओं से विशेष रूप से ग्रसित रहे हैं।

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - जेष्ठा - पृ.सं.८८।

(७) नन्द-भाभी का पारस्परिक संबंध --

नन्द-भाभी के संबंधों में एक विचित्र रस और माधुर्य होता है। ससुराल में बहू की जो स्थिति होती है, उसमें उसे एक नन्द ही ऐसी मिलती है जिसके साथ वह मैत्री भाव रख सकती है अन्य सदस्यों से तो उसे भय रहता है, या फिर उनका आदर करना होता है। भारतीय परिवार में ' नन्द - भाभी ' का यह रिस्ता विशेष मात्रा में कटुतापूर्ण ही रहा है और सहज आत्मीयता का कम रहा है। ' नन्द ' शब्द संस्कृत ' न नंद ' का अर्थ है -- सेवा की जाने पर भी प्रसन्न न होने वाली।

शिवानी के कहानी साहित्य में नन्द-भाभी का सहज,आत्मीय रूप अपवाद स्वरूप ही है, प्रत्युत उनके कटु-सम्बन्धों की चर्चा ही अधिक की गई है। पहाड़ी तथा उच्चवर्गीय,महानगरीय स्तर पर नन्द भाभी से अनेकेन प्रकारेण असंतुष्ट रहती है।

ग्राम्य जीवन को प्रस्तुत करनेवाली ' लाटी ' और ' नथ ' कथाओं की नायिकाओं को छलने में नन्द अपनी माँ के स्वर में स्वर मिला कर इसको जीना मुष्किल कर देती है, जैसे ' लाटी ' कहानी में बानो के विवाह के तीसरे दिन बाद पति लाम पर चला जाता है तो बानो पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता है- " उन दो वर्षों में बानो ने सात-सात नन्दों के ताने सुने,भतीजों के कपड़े धोए। ... सास और चचिया सास के व्यंग्य बाण उसे छेद देते, वह घुलती गई और एक दिन क्षय का तक्षक कुंडली मार कर उसकी नन्ही-सी छाती पर बैठ गया। "[१]

' नथ ' कहानी में पुट्टी को गुमानसिंह माता,भाई,भौजाई और विधवा बहिन से लोहा लेकर ब्याह लाया था। घर लाने पर सास उसके साथ एक शब्द भी नहीं बोलती। नन्द के साथ वह बरतन मलवाने बैठती है, तो नन्द उसकी ओर देखकर, पच्च से थूकती है। पति के लाम जाने पर तो पुट्टी पर विपत्तियों का पर्वत टूट पड़ता है, सास और नन्द की गालियाँ सुन कर वह जानबूझकर बहरी बनने का नाटक करती है तब विधवा नन्द का पर्वताकार शरीर क्रोध के भूकम्प से डोल उठता --

---

१ कृष्णवेणी - लाटी - पृ.सं.७१।

" इतना घमण्ड था न अपने रूप का । तिब्बत के जादू से हमारे भैया को भेड़ बनाकर रख दिया । इसीसे भगवान ने सजा दी । भगवान करे, तुम्हारे कानों पर ही नहीं पूरे शरीर पर वज्जर गिरे । कुलच्छनी न होती, तो क्या सुमान को लद्दाख जाना पड़ता । " १

सफेदपोश परिवारों की ननद का चरित्र भी भिन्न नहीं है । ' अपराधी कौन ' कहानी में उच्चवर्गीय परिवारों में भी आभूषणों के प्रति अभिलाषा के कारण ननद और भाभी किस स्तर तक पहुँचती है यह दिखाया है । बीस वर्ष पूर्व की बात है —" यही यह ननद (मीना) उसकी (अमला की) प्राणप्रिय सखी थी, वही उसे सिर आँखों पर बिठा कर इस गृह में लाई थी, उसकी सास ने तो दूसरी लड़की पसन्द की थी । कुछ दिनों तक दोनों की मैत्री, मुहल्ले-भर की स्त्रियों के हृदयों में विष घोलती रही । दोनों एक-से कपड़े पहनती, खिल-खिलाती एक-दूसरी को बाँहों में लिए फिरती रही, फिर जैसा प्राय: ऐसी प्रगाढ़ मैत्री का अन्त होता है, वैसा ही हुआ । अचानक दोनों में ऐसी उनकी ( ) आँखों ही आँखों में नंगी तलवारें लपलपाने लगी और दो टूटे हृदयों की दरार, मीना की विदा तक नहीं जुड़ी । झगड़े का सूत्रपात हुआ था आभूषणों को लेकर । " २

यहाँ पर भाभी नेहले पे देहला है । पहले भाभी करधनी चुराती है, फिर मीना चुरा कर अपनी सूटकेस में रखती है, दूसरे दिन वापस जाते वक्त ट्रेन में वह देखती है तो करधनी के साथ उसका हीरे का अस्सी हजार रुपये का हार भी भाभी ने चुराया होता है — वह कहती है —' हाय ! कितने छोटे अपराध की, कितनी बड़ी सजा दे गई भाभी । " ३

सुशिक्षिता, घमण्डी ननद अपने भाई की गृहस्थी नष्ट करने का कारण बनी दिखायी देती है ' भिक्षुणी ' कथा में । ' किकी ' की ननद डॉक्टर है, उसका अपनी शिक्षा, रुचि और सौन्दर्य का गर्व ' किकी ' के आकर्षक व्यक्तित्व की तुलना में फीका पड़ता है, ननद अपनी माँ को साथ लेकर किकी को प्रस्त कर देती है । किकी पुराने प्रेमी के यहाँ चली जाती है ।

---

१ चिरस्वयंवरा - नथ - पृ.सं.७७ ।
२ मेरी प्रिय कहानियाँ - अपराधी कौन - पृ.सं.११३
३ - वही - पृ.सं.१२० ।

भामी --

शहरों में, शिक्षित परिवारों में ननद-भामी के संबंधों में सुधार होता दिखाई दे रहा है, परन्तु ग्रामों में जहाँ अशिक्षा है, अज्ञान है, वहीं ननद-भामी के व्यवहार में कटुता दिखाई देते हैं।

(८) भामी-देवर का पारस्परिक संबंध --

' चाचरी ' कथा में नायक श्रीनाथ मंझली भामी की ममेरी बहन की ओर आकर्षित होता है, यह भामी ताड जाती है, तब कहती है -- " क्यों हो लालज्यू (देवर) हमारी चाचरी को देख कर रीझ गये क्या ? कहो तो बात चलाऊं। " [१]

इस कहानी के भामी-देवर के रिस्ते में भामी देवर की आखिर तक सहायता करती दिखायी देती हैं।

इस कहानी में नायक भामी की बहन के साथ विवाह करने से सफल दिखाया है किन्तु ' चलो गी चन्द्रिका ' और ' पुष्पहार ' में असफल होता है। ' चलोगी चन्द्रिका ' का नायक चन्द्रवल्लभ और भामी में सहज हास-परिहास एवं मनोविनोद की पवित्र एवं निश्चल भावना दिखाई देती है -- " सुनो जी चन्द्रलला, तुम्हारी नीयत तो हमें ठीक नहीं लग रही है, पर पहाड में दो सगी बहनों का विवाह सगे भाइयों में नहीं होता, जानते हो ना ? "

" जानता हूँ। " उसने हँस कर कहा था।

" तब यह भी जान लो देवर, कि हमारे बाबू जी बड़े कट्टर हैं। कभी इस गृह के दूसरे बेटे को अपनी दूसरी बेटी का हाथ नहीं थमाएंगे। "

" और अगर बेटी खुद थाम ले, तब ? " [२]

ऐसा ही एक प्रसंग ' पुष्पहार ' कथा में है, जहाँ भामी अपनी सुन्दर, रूपवती बहन का प्रस्ताव मंत्री के सम्मुख रखती है -- " बहुत सुन्दरी है मेरी बहन। ठीक से देखोगे तो आँखे नहीं फेर पाओगे, लल्ला। "

---

१ धर्मयुग - अक्तूबर - दीपावली अंक - ' चाचरी '।

२ गैन्डा - चलोगी चन्द्रिका - पृ.सं.७९।

" सब बड़ी बहनें अपनी कुँआरी बहनों के लिए यही कहती हैं, माजी । " [१]

उसके रुप की चर्चा सुनते सुनते उसके कान पक गए थे और माँ-भाभी के परम आग्रह से लाए गए उस रिश्ते को उसने खोटे सिक्के-सा फिर दिया ।

शिवानी की कहानियों में भाभी-देवर सम्बन्धों में विविध आयाम न के बराबर है। ऊपर निर्दिष्ट हास-परिहास एवं पवित्र भावना के अलावा एक चित्र देवर का है। वह विधवा छोटी भाभी की ओर लोलुपकामी भावना से देखता है। छोटी भाभी की दो विधवा जेठानियाँ देबूलला को अपने कटाक्षों से रससिक्त करती इनके कारणों से देवर उसकी ओर बुरी नजर से देखने लगता है। देबूलला बार-बार छोटी बहू को उनमें शामिल होने के लिए आमंत्रित करते रहते। देबुलला का दु:साहस दिन दुगुना, रात चौगुना बढ़ता जाता है , उनकी शिकायत विधवा बहू किसीसे नहीं कर सकती — " देबूलला पर बड़ी अम्मा का अगाध स्नेह था, फिर एक लम्बे अरसे से वे मेरी जिठानियों के साथ रहते आये थे, कभी किसी को उनके विरुध्द शिकायत नहीं थी, मेरे ही लिए वे एकाएक इतने बुरे कैसे हो गए ? फिर मेरे पास सबूत ही क्या था ? .... जल में रहकर मगर से बैर नहीं हो सकता..। " [२]

छोटी भाभी का सौन्दर्य सात महीने में प्राप्त.. वैधव्य और दो बड़ी कुरुप भाभियाँ आखिर देवर से बचने के लिए छोटी भाभी को घर छोड़कर भाग जाना पड़ता है।

(९) दादी —

साहित्य समाज का दर्पण है। उसका कर्तव्य है कि समाज का सही चित्रांकन करके लोगों के समक्ष रखे। आज एकाकी परिवारों की अधिकता है। इसलिए शिवानी की कहानियों में एकाकी परिवार का चित्रण मिलना स्वाभाविक है। अपवाद स्वरुप 'दीदी' कथा ऐसी है, जिसकी नायिका ही 'दीदी' है। कहानी पढ़कर हमें लगता है कि सचमुच दादी या नानी का घरमें होना कितना आवश्यक है।

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - पुष्पहार - पृ.सं.४३ ।
२ - वही - चीलगाड़ी - पृ.सं.७८ ।

उनके अनुभव,सलाह की सबको आवश्यकता रहती है।

इस कथा में दादी का अनुभवसंपन्न व्यक्तित्व विविध आयामों से दर्शाया है अपनी आधुनिका ,फैशन परस्त बहू को नौकर रखते समय वह सतर्क करती है — " इतनी सीख हमारी गांठ बांध लो बहू, नौकर हो या मेहरी,अगर काम तेज है,तो मालकिन को चूना लगाने में भी तेज होंगे। नौकर तो मूर्ख ही रहना चाहिए बेटी।"[१]

बहू दादी के इस कथन को गंभीरतापूर्वक नहीं लेती,तब दादी उस नौकर के बर्ताव पर कड़ी नजर रखती है। वह अपनी बहू को अपनी आशंका के बारे में बताती थी " क्यों री बहू, यह निगोड़ा रात को जाता कहाँ है ? जब तू तनख्वाह पूरी देती है,तो कुछ काम कर। गृहस्थी का घर है। न जाने कब कौन-सी जरूरत आ पड़े।"[२]

दादी की चेतावनी सच निकलती है। वह नौकर का वेश धारण किया हुआ पाकिस्तानी जासूस होता है। उसे और उसके साथी को पकड़ कर लोग जब मारने के लिए उद्धत हो जाते हैं, तब जो दादी नौकर की ओर संदेह की दृष्टि से देखती थी, उसके प्रति कोमल हो जाती है, वह पड़ोसी से कहती है — " ना बेटा ना, इन्हें मारकर क्या तेरा बेटा लौट आएगा।"[३]

ऐसी दादी पापभीरु ,धर्मपरायणा स्वभाव के कारण बच्चों को भी प्यारी न लगे, तो ही आश्चर्य है। पोते उससे लिपट कर याचना करते हैं —

" प्रॉमिस दादी तुम इस बार भागोगी नहीं ?"[४]

ऐसे ही दो पीढ़ियों का संघर्ष मन्नू भंडारी की 'मजबूरी' कथा में दिखाई देता है, जिसे दादी और पोते के अटूट स्नेह के माध्यम से दिखाया है।

दादी के अलावा स्त्री के नानी रूप का चित्रण भी है जैसे 'करोगी चन्द्रिका' 'भीलनी (सुहासिनी के पुत्र का पालन करने वाली उसकी माँ) आदि।

नारी के इन रूपों के अलावा मामी,बुआ,मौसी,चाची,आदि रिश्तों में भी नारी-रूपों की विविधता नजर आती है।

---

१ किशनुली - दादी - पृ.सं.११८।
२ - वही - पृ.सं.११९।
३ किशनुली - दादी पृ.सं.१२१।
४ वही पृ.सं.११३।

(१) पतिता --

पतिता नारी उसे कह सकते हैं, जो वास्तव में वेश्या ही है किन्तु प्रेमी के प्रति त्यागमयी भावना रखनेवाली वेश्या । इस भावना के कारण वह वेश्या के सामान्य स्तर से कुछ ऊपर उठकर 'पतिता' कहलाती है। यह भी सामाजिक नीति-नियमों को न माननेवाली,अर्थार्जन के लिए देहविक्रय करनेवाली स्त्री होती है।

शिवानी की सर्वश्रेष्ठ बहुचर्चित कहानी की नायिका 'हीरावती' वेश्या के पद से 'पतिता' की श्रेणी को पहुँचने का कारण है, उसका अतुलनीय त्याग। नारी का सर्वश्रेष्ठ रूप मातृत्व है, प्रेमी की प्रतिष्ठा को अबाधित रखने के लिए वह अपनी एकमेव सन्तान को तिलांजलि देती है। स्वयं लेखिका ने हीरावती को 'पतिता' की संज्ञा दी है। "कहानी की नायिका पतिता है, किन्तु जैसे तीर्थस्थान में किया गया पाप पाप नहीं होता,ऐसे ही कुमाऊँ की पतिता में भी एक अनोखा तेज रहता है, ऐसा मेरा विश्वास है। वह पतिता होकर भी पतिता नहीं लगती। अपने प्रेमी को बचाने में ,अपनी अवैध सन्तान को जलसमाधि देने में वह तिलमात्र भी विचलित नहीं होती।"[१] इस तरह हीरावती जैसी पतिता को शिवानी ने सतीरूप में प्रतिष्ठित किया है।

शिवानी के 'चिर स्वयंवरा' कहानी संग्रह में 'दुआ' और 'शिबी' कहानियों में क्रमशः रघुला और शिबी दो वेश्याओं का चित्र मिलता है। शिवानी के कहानी और उपन्यास दोनों में चित्रित वेश्याएँ अधिकतर अभिजात-वर्गीय हैं। इसमें रघुला और शिबी दोनों अपने पूर्वजों के पेशे के अनुसार इस कार्य को करती हैं। रघुला जिस वर्ग की है वे नारियाँ भजन,कीर्तन,और परी चाँचरियों के पहाडी पूजागीत गानेवाली और शरीर बेचनेवाली हैं।

आठ वर्ष की उम्र में रघुला ने गुरु की बंदिश को इस बारीकी से दुहराया कि बुन्दू मियाँ दंग रह गए और रघुला के पैर छूकर लोट गाठ" वाह उस्ताद,आज से तू गुरु और मैं चेला,मोतिया बेटी,इस हीरे को गुदडी में मत छिपा। देख लेना एक

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - भूमिका - पृ.सं.१।

दिन इसके सामने बड़े-बड़े उस्ताद पानी भरेंगे । देख मेज इसे, वरना इसकी विद्या गले ही में सूख कर रह जायेगी । " [१]

सोलह वर्ष तक गाने की तालीम को प्राप्त करने पर रज्जुला अनुपम सुन्दरी भी बनी—

" उस बालिका का सौन्दर्य ही उसके अछनद्ध व्यक्तित्व में था । लगता था, वह मानवी नहीं, स्वर्ग की कोई स्वप्न-सुंदरी अप्सरा है – हाथ लगाते ही उड़ जाएगी । बेनजीर, इसी से उसे बड़े यत्न से रुई की फांकों में सहज कर रखती थी । वह उसका कोहनूर हीरा थी, जिसे न जाने कब कोई दबोच ले । "

बेनजीर इस अनमोल हीरे को बेचने का सोच रही थी, तब तक रज्जुला छोटे सेठ के प्यार के बंधन में बंध गई । उसकी मृत्यु के बाद वह गोरखपंथी बन जाती है । अपने प्रेमी के लिए अपना गाना, यौवन मानो धुनी में जला देती है । इस अलौकिक व्यक्तित्व को भी ' पतिता ' की संज्ञा क्यों न दी जाए ?

(२) वेश्या —

अर्थार्जन और कामवासना की पूर्ति के लिए वार विलास करनेवाली नारियाँ ' वेश्या ' कहलाती हैं । इनके अलावा ' शिबी ', ' बिन्दु ' और ' तिलका ' इन वेश्याओं की कथाएँ शिवानी ने चित्रित की हैं । ' शिबी ' फैशन परस्त वेश्या है, जिसके प्रेमी गाँव भर के सभी स्तर के लोग हैं । ' बिन्दू ' नाचने गाने में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर थी —" प्राय: ही सुनने को मिलता कि बिन्दू फलाँ ठाकुर की रक्षिता बनी इठला रही है, फलाँ ठकुराइन ने उसके दु:ख से विष खा लिया । एक पारसी ठेकेदार उसे बम्बई घुमाने ले गया था ... । " [२]

यही बिन्दू बीस साल बाद अपने पति के साथ गृहस्थी बसा कर बदल जाती है — " चारों धाम कर आई हैं हम, एक धरम शाला बनवा दिए है, एक शिवाला बनवा रहे हैं ... क्यों जिज्जी, अब तो हमें कुछ पाप नहीं लगेगा । "

वेश्याओं में ' तिलका ' का चरित्र अपने आप में अलौकिक है । " उन दिनों, उस किशोरी नृत्यांगना के असामान्य रूप-लावण्य की नैनीताल में विशेष रूप से

---

१ चिर स्वयंवरा – धुआं – पृ.सं.३७ ।

२ – वही – बिन्दू पृ.सं.११६ ।

चर्चा थी। नैनादेवी की मधुर प्रशस्ति के बीच भी उसके उपासकों की टोली, तिलका के रुप यौवन की मीठी प्रशंसा करने में नहीं चूकते।"

'पुष्पहार' की दुर्गा का चरित्र वेश्या से भी गया बीता है। विवाहिता होकर भी यह व्यभिचारी स्त्री कामवासना की पूर्ति के लिए एक के बाद एक पुरुष बदलती रहती है।

'रथ्या' की बसन्ती बलात्कार की शिकार होने के पश्चात् कैबरे डान्सर तथा वेश्या बन जीवन व्यतीत करती है।

(४) बलात्कारिता --

बलात्कार के संदर्भ में नारी निर्दोष होकर भी सदा से ही इस संबंध में पिसती आयी है। ऐसी पीड़ित नारी के प्रति समाज की संवेदना कभी नहीं रही। किन्तु बदलती परिस्थितियों में आज 'पुष्पा पन्त' सदृश नारी की चिन्तन धारा बदली हुई दिखती है। पुष्पा के साथ जो हादसा हुआ, वह किसी को मालूम नहीं। पुष्पा के अन्तर्मन में छिपी द्वेष-भावना मौका पाते ही एकदम उमड कर बाहर आती है और अपने अत्याचारों का बदला लेती है।

दूसरी एक बलात्कारिता है सुमन श्रीवास्तव। जिलाधीश सुमन की तरफ विरोधी दल का नेता रणधीरसिंह उसका गांभीर्य, तटस्थता और असाधारण प्रतिभा से आकर्षित है। सुमन उसके प्रति उदासीनता दिखाती है। एक बार निर्जन वन में सुमन पर वह बलात्कार करता है, कहता है " तुम्हारी उदासीनता ने ही मुझे ढीठ बना दिया था। मीटिंग होती, तो तुम जानबूझकर ही मुझे अपनी तटस्थता से पागल बना देती, किन्तु तुम्हारे खोखले अभिनय को मैंने पकड लिया था। कई बार तुम्हारी लुकी-छिपी मुग्ध दृष्टि का मूक आह्वान मैं पा चुका था। सच कहो सुमन।" [१]

इस पर सुमन को अतल मन की गहराइयों में बैठे प्रेम का अनुभव होता है, किन्तु वह प्रकट नहीं करती। वह आगे कहता है -- " कैसी विचित्र थी तुम्हारी सज्जा। .... कभी कैंसे-सी चमकती अर्धनग्न पीठ का बडा औदार्य से प्रदर्शन कर

---

१ करिए छिमा - जिलाधीश - पृ.सं.४७।

रहा तुम्हारा ब्लाउज और कभी किसी छोकरे के-से ढीले कुर्ते की मेखला में लुका-छिपी खेलता और भी रहस्यमय बन गया तुम्हारा यौवन। क्या तुम जान बूझकर स्वयं ही दुर्भाग्य को नहीं न्यौत गई थी।"[१]

सुमन दूसरे की न बन पाये इसी उत्कट इच्छा से रणधीरसिंह से यह कर्म करने को उद्युत हो जाता है। सुमन भी इसके उत्कट प्रेम का अनुभव करके उसके साथ विवाहबध्द हो जाती है। तटस्थ,उदासीन प्रिया को मनाने का एक उपचार इस रुप में यहाँ बलात्कार आया है। कुछ फिल्मी ढंग की अवास्तव लगने पर भी रोचक है।

(४) शर्विलक,ठगिनी,छलित नायिकाएँ --

नारी स्वतंत्रता के इस युग में नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी कर रही है। फिर 'चोरी' का क्षेत्र अछूता कैसे रह जाए ? वेश्याएँ अर्थार्जन के लिए शरीर बेचती हैं किन्तु शर्विलक स्त्रियाँ अपनी चतुरता,साहस के बल पर अर्थार्जन करती हैं। इनमें सभी वर्गों की स्त्रियाँ दिखाई देती हैं। कभी कभी आर्थिक दृष्टि से संपन्न होकर भी किसी चीज को पाने की तीव्रेच्छा यह कर्म करने को मजबूर करती है। इसे एक प्रकार की मानसिक विकृति कह सकते हैं।

पेशेवर शर्विलक बनी एक महिला का उदाहरण शिवानी की कहानी में मिलता है। 'सती' कहानी की नायिका मदालसा सिंधाड़िया ऐसी ही एक चोर है। वह महिलाओं के डिब्बे में आती है। छह फुट साढे दस इंच ऊँची प्रिटोरिया निवासी मदालसा अपने त्रुटिहीन अंग्रजी भाषण से सबको मोहित करती है। फिर पर्वतीय क्षेत्र में एक साल पूर्व मृत पति की लाश को लेकर 'सती' होने जा रही है, वह बताती है। किन्तु मदालसा की वेशभूषा में सद्य: वैधव्य का कहीं कोई चिह्न नहीं था। वे लम्बी होने पर भी पठानिन-सी गठे कसे शरीर की लावण्यमयी गतयौवना थीं। उनके बाल किसी दामी सैलुन में कटे-संवरे लग रहे थे। अपनी धानी रेशमी साडी को वे हाफ-पैंट की भाँति ऊपर चढा दोनों पैरों की

---

१ करिए छिमा - जिलाधीश - पृ.सं.४७।

पालथी मार,आराम से जम गयी।" [१]

इस तरह अपनी बातों से वह तीनों सहयात्रियों को प्रभावित करती है। अपने घृत-पक्वान खिलाती है। वह खाने से गहरी नींद में डूबी महिलाओं के गहने और द्रव्य लेकर फरार हो जाती है।

'अपराधी कौन' कथा में ननद और भाभी 'करधनी' के पीछे इतनी दिवानी है कि केवल उसे पाने के लिए जो तरीका अपनाती हैं, वह सधे चोरों के कौशल से भी बढ़ कर है।

'जेष्ठा' कहानी की नायिका गिरी और उसका प्रेमी बीस साल तक विवाह की प्रतीक्षा में अविवाहित रहते है, किन्तु बेचारा सपने को अधूरा छोड़कर मर जाता है। उधर उसीका बड़ा भाई भी गिरी के लिए ही अविवाहित बैठा था, उसने गिरी के आगे विवाह का प्रस्ताव रखा। इस बार 'अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति' की कामना से गिरी मंगलसूत्र में मूंगा गुंथनी है, जिस मूँगे को वह लेखिका (अपनी सहेली) से चुराकर लायी है।

ठगिनी -

'साधो ई मुर्दन कै गाँव' में ठगिनी नारी का रूप वर्णित है, जो जिजाजी के आदेश के कारण ठगिनी बन गई है। अधेड उम्र के विवाहेच्छु पुरुषों से विवाह रचा कर,अपने स्वस्थ यौवन के ब्रह्मास्त्र से पति का विश्वास प्राप्त कर, कुछ ही दिनों में मरी सौत के कंगना,सास की जीर्ण पोटली में छिपी संपत्ति, पति की धनराशि लेकर हवा हो जाती।

'डकैत' के रूप में भी नारियाँ होती है जैसे 'फूलनदेवी' आदि। किन्तु शिकारी की नायिका डकैत की प्रियतमा है। 'साधो ई मुर्दन कै गाँव कहानी में पति डकैत है।

हत्यारिन,खुनी नायिकाएँ —

हत्यारिन और खूनी नायिकाओं के दो प्रकार दिखाई देते हैं — एक वे

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - सती - पृ.सं.८३।

जिनके हाथों अनजाने में किसी की हत्या हो गई, दूसरी वे जिन्होंने पूर्वनियोजित पद्धति से जान बूझकर खून किया है - पहले वर्ग में -- ' सुहासिनी, पुष्पपंत और चन्नुली आती है। दूसरे वर्ग में -- लक्ष्मी (माई), जानकी के (कमला)

' भीलनी ' कहानी में सुहासिनी की विलासिनी की बड़ी बहन है, जो छोटी बहन की तुलना में कुरूप है। सुंदरी बहन विलासिनी को जब अपने पति की बाँहों में सोयी पाती है, तब इस विश्वासघात से उसकी आँखों में खून उतर आता है। अपनी बहन को मारने वह गोली चलाती है, जो उसके पति को लगने से वह मर जाता है। यह देखने पर वह पतिव्रता स्वयं को गोली मारकर आत्महत्या कर लेती है। मरते समय बहन पर दोनों हत्याओं का इल्जाम न आए इस हेतु पुलिस के आगे झूठा बयान देती है -- " मैंने देखा ... मेरे पति की बाँहों में एक अर्द्धनग्न काली-कलूटी भीलनी पड़ी सो रही है। मैं क्रोध से एक क्षण को विवेक खो बैठी। भागकर मेरी रिवाल्वर निकाली - मारना चाहा था भीलनी सौत को (विलासिनी) पर निशाना चूक गया अंकल आय बेग् आलवेज् पुअर शॉट)(मैं पक्की निशानेबाज कभी नहीं रही। "१

' तर्पण ' कहानी की नायिका पुष्पा पन्त अपने पर वर्षों पूर्व किये गये बलात्कार का बदला लेती है यह हत्या उसके हाथों क्रोधावेश में हो जाती है .... उस व्यक्ति की कुत्सित हँसी उसे पुरानी घटना की याद दिलाती है, फिर अचानक -- " बिजली की तड़प से पुष्पा पन्त खड़ी हो गई। क्रोध से उसका शरीर थर-थर काँप उठा। ... वह सब स्मृतियाँ एक साथ तीखे भालों-सी उसे कोंच उठीं। वह क्षण भर को सब कुछ भूल गई। कुछ ही घंटों पूर्व तम्बू गाड़ने लाया गया बड़ा-सा घन वहीं पड़ा था। लपक कर उसने उठाया और दोनों हाथों से पकड़ कर दम्न से भोलादत्त के सिर पर दे मारा। "२

काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ, मोह इन षड्रिपुओं में कोई एक कारण इन हत्या के लिए उकसाता है। जा रे एकाकी ' कथा की भोली - भाली चन्नुली को पति की लाश पर मृत्यु की खबर सुन कर भी विश्वास है कि वह जिंदा है। अत: वह सौभाग्य

---

१ गैन्डा - भीलनी - पृ.सं.६९-७० ।

२ माणिक - तर्पण पृ.सं.७९ ।

चिह्न नहीं उतारती । इस बात से उसकी प्रतिवेशिनी उसे हर दम कोसती रहती है -"यह शृंगार क्या रांड-रण्डुली औरत को शोभा देता है ?"[1]

चन्दुली के पातिव्रत्य पर ऐसी आशंका करने से चन्दुली चिढ जाती है - "मन भारी था, उसने मुझसे ऐसी बात कह दी, तो मैं क्रोध से पागल हो गई, खींच कर मैंने दरांती उसकी ओर फेंकी, मैं क्या जानती थी दीदी, कि एक ही चोट में उसकी गर्दन ऐसे लटक जाएगी ?"[2] अदालत में बार-बार पूछने पर वह यही उत्तर देती है, दीदी से भी कहती है —

"आप ही बताइए दीदी, मैं झूठ बोलती ? खून क्या मैंने जान-बूझकर किया था ? वह तो मुझसे हो गया था ।"[3]

पूर्वनियोजित हत्याएँ —

"अलख माई" की माई अर्थात् लक्ष्मी को ससुराल में सास और पति नाना रीतियों से सताते हैं। उनके चंगुल से छूटने का एक ही उपाय माई को सूझता है, हत्या । वह घाटी (ऊँची चट्टान) से नदी में गिरा कर दोनों को खत्म करती है ।

मनुष्य को हिंसा के मार्ग पर लानेवाली 'प्रतिशोध' की यह प्रवृत्ति मनुष्य के मन की सहजात प्रवृत्ति है। नारियाँ प्रतिशोध लेने में बड़ी कठोरता से काम लेती हैं। शिवानी के नारी पात्र सब कुछ सह सकते हैं, परन्तु प्रणय के मार्ग में आने वाले अवरोध को सह नहीं सकते। कहानीकार 'प्रसाद' का एक नारी पात्र कहता है — "प्रणय वंचित स्त्रियाँ अपनी राह के रोड़े - विघ्नों को दूर करने के लिए वज्र से भी दृढ होती हैं।"

उक्त कथन को सार्थक करने वाली अनेक घटनाएँ शिवानी की कहानियों में

---

१ अपराधिनी - जा रे एकाकी - पृ.सं.२८ ।

२ - वही - पृ.सं.२८ ।

३ - वही - पृ.सं.२९ ।

देखी जा सकती है। नारी का यह दुर्बल पक्ष है कि वह कभी अपनी सौत नहीं देख पाती, उसे मिटाने में चाहे अपने पति की आत्मीयता में भी दरार पड जाए।

' के ' कहानी की नायिका डॉक्टर कमला ' के ' अपने पति शेखर को ' किशोरी ' से बढता मेल-जोल सह नहीं पाती। कहीं शेखर सुन्दर उस की हमउम्र किशोरी के आगे कुरुप कमला को त्याग न दे, इस विचार से उसका मत्सराग्नि भड़क उठता है। किशोरी को कुल्फी में विष खिलाकर जान से मारती है। ऐसे ही सौतिया डाह से ' गैन्डा ' की सुपर्णा अपनी सौत को बनी सखी को मारना चाहती है, उससे पहले वह खुद ही फूड पॉइझनिंग से चल बसती है।

नारी के इन विभिन्न रुपों के अलावा एक महत्वपूर्ण रुप ऐसा है, जो नारी-जीवन से संबंधित है, वह है ' सखी ' या सहेली का। शिवानी की अधिकांश आत्मकथात्मक कहानियाँ सखी के ऊपर आधारित हैं। सखियाँ शिवानी की शान्तिनिकेतन में सहपाठी थीं या पहाड (अल्मोडा) में साथ खेलनेवाली थीं। मेरे खयाल से इनका यहाँ उल्लेख करना अनुचित न होगा। शान्तिनिकेतन की सहपाठी सहेलियाँ - अनसूया पटेल, कृष्णवेणी, श्रीमती लक्ष्मी कान्तम्मा रेड्डी। गाँव में साथ खेलनेवाली तथा पढनेवाली सखियाँ हैं - बिन्नू, तिलका, पिरी, कुसुम आदि।

निष्कर्ष

१) शिवानी जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी जीवन के कई उजले मैले पहलुओं को उजागर किया है, जिनको गहराई से देखने की एवं उनका विश्लेषण करने की चेष्टा मैंने की है। प्रस्तुत अध्याय में लेखिका की ८२ कहानियाँ अनेक रुपा नारी की जो मालिका प्रस्तुत करती है, वे न केवल कुमाऊँ प्रदेश की बल्कि आम स्त्री-जाति की झाँकियाँ हैं।

२) कहानी की नारी पात्रों के आधुनिक दृष्टिकोन से जो वर्गीकरण है, उसके अनुसार अवासनात्मक, वासनात्मक तथा अन्य वर्ग के अंतर्गत आनेवाली नायिकों में पारिवारिक, सामाजिक, दांपत्य जीवन से संबंधित नारी के सारे रुप दिखाई देते हैं माता, पत्नी, प्रेमिका इन मुख्य रुपों के अलावा बहन, मामी, सास मे पारिवारिक तथा वेश्या, ठगिनी, हत्यारिन, आदि नारी के रुपों को चित्रित किया है।

३) प्रेमिकाओं के दो रुप एक रुप उस प्रेमिका का जो प्रेम-विवाह करने में सफल हुई है, और दूसरा रुप उस प्रेमिका का जो प्रेमी द्वारा ठगी, जाती है, वंचिता होती है।

४) दांपत्य जीवन में भी सफल गृहस्थ नायिका और असफल गृहस्थ नारी के दर्शन होते हैं।

५) नारी के विधवा रुप का चित्रण भी अधिक है। विधवा का पुनर्विवाह किसी भी कथा में नहीं दर्शाया है।

६) शिवानी की पहाडी अंचल की अशिक्षित नारी सामाजिक, धार्मिक, ज्योतिष विषयक अन्धविश्वास का पालन करती है, साथ ही सुसंस्कृत सुशिक्षित, उच्चवर्गीय नारियाँ भी इन अन्धविश्वासों की शिकार हुई दिखाई देती हैं जैसे जेष्ठा कहानी में पिरी, गैडा, सुपर्णा, चांद की मानवी।

७) शिवानी ने कुमाउं, अंचल की सामाजिक परम्पराओं और विवाह प्रथा का अत्यंत सफल चित्र प्रस्तुत किए हैं।

८) शिवानी ने अपने जीवन में बहुत कुछ देखा है और जो देखा है, खुली आँखों से देखा है। एक ओर वे राजा महाराजाओं के महलों में रही हैं, अत: उनके माहौल से सुपरिचित हैं। दूसरी ओर बड़े पदाधिकारियों, सरकारी अफसरों राजनीतिक नेताओं और बुद्धि-जीवियों के अभिजात जीवन से परिचित हैं। तीसरी ओर वे ग्रामीण अंचल के परिवेश, रहन-सहन, रीति रिवाजों को भी जानती हैं। इतना ही नहीं वे काश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से बंगाल तक परिव्राजा की भाँति पर्यटन करती रही है।

९) गृहस्थी में असफल बनी नारियाँ तंग आकर वैष्णवी, संन्यासिनी बनी हुई दिखाई है।

१०) यद्यपि शिवानी को आँचलिक कहानीकार का लेबल लगा नहीं सकते, फिर भी कह सकते हैं कि शिवानी की कहानियों में कुमाऊँ आँचल मूर्त हुआ है।

११) इस प्रकार शिवानी की कहानियों में जानी पहचानी नारियों के रूप तो दिखाई देते ही हैं, पर जब हम खूनी, हत्यारिन, संन्यासिनी जैसे अलौकिक चरित्रों का परिचय प्राप्त करते हैं, तो मन में कौतूहल का निर्माण अवश्य होता है।